Written by B4M
Friday, 21 August 2009 13:57

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री को बदले जाने के लि□ ब्राम्हण पत्रकारों ने लाबिंग शुरू कर दी है. इंदौर के पैसे से भोपाल में पत्रकारों के लि□ □क भोज रखा गया था. भोज तो दरसल □क बहाना था. इंदौर के □क बीजेपी नेता ने इस सब को प्रयोजित किया और ब्राम्हण पत्रकारों को उनका उचित स्थान दिलवाने के लि□ ब्राम्हण मुख्यमंत्री की वक्त की जरूरत बताया. हलांकि इस आयोजन के जरिये □क तीर से दो निशाने साधने की कोशिश की गयी है. □क तो ब्राम्हण मंत्रियों को इसके जरिये सी□म शिवराज सिंह से लड़वाने की कोशिश है और दूसरा अगर यह लडाई शुरू होती है तो इसका सीधा लाभ इंदौर के दिलवाया जाये और मालवा के दमदार नेता कैलाश विजयवर्गीय को मुख्यमंत्री बनवाया जाये. इस सब जोर गणित के पीछे ब्राम्हण पत्रकारों को मोहरा बनाया जा रहा है.

गरीब गुरबे पत्रकार अपने ही बीच के कुछ दल्ले नुमा पत्रकारों की चाल को भोज करने के बाद ही समझ पा□. भोज में शामिल अधिकांश पत्रकार भोज कर वापस हो लि□ क्यूंकि इस आयोजन में जो चहरे सामने आये उनमे कुछ घोषित दलाल, कुछ घोषित शराबी और कुछ घोषित स्त्रीलोलुप पत्रकार थे. इनमे वे लोग भी शामिल हैं, जिनके दामन पर अमानत में खयानत और ल□ीबाजी तक के दाग लगे हैं. इस भोज में ग□ पत्रकार सुरेश शर्मा ने बताया कि मुझे तो इनका □ंडा तक नहीं पता था. मुझे तो अचानक भाषण देने को खड़ा कर दिया गया. इसका औचित्य क्या था, मुझे तो यह तक नहीं पता था.

ब्राम्हण भोज के लि□ लाखों रूपये □क इन्दौरी दलाल ने दि□ थे. उनका मकसद मुख्यमंत्री शिवराज सिंह के खिलाफ ब्राम्हण पत्रकारों को □क्जुट करना और इस बात को फैलाना था कि शिवराज के सामने ब्राम्हण मंत्री अनूप मिश्रा, गोपाल भार्गव और लक्ष्मीकांत शर्मा अब □क चुनौती हैं लेकिन इस आयोजन में बिचौलिये और कुछ चरित्रहीन ब्राम्हण पत्रकारों के सामने आने से यह शो फ्लॉप हो गया. अच्छी संख्या के बावजूद सभी ब्राम्हण पत्रकारों को □क रा□ नहीं किया जा सका. इसमें शामिल दो पत्रकारों को लाल बत्ती चाहि□ थी तो आठ को सरकारी फिल्म के टेंडर तो बाकि को सप्लाई ऑडर चाहि□ थे. सबके अपने-अपने □ंडे थे. इनमे से २७ लोग ऐसे थे जो पत्रकार बिरादरी में सरि□फ काले काम को छुपाने के लि□ हैं.

Written by B4M
Friday, 21 August 2009 13:57

□ कऐसा था जसिकेचेहरे पर उसकेकाले कारनामों की कलखि सा□ न□र आती है. इनमे कुछ अपने कारनामों से इतने बदनाम हो चुकेहै कि वे ऐसे आयोजन के जरयि अपने अस्तत्वि को तलाश रहे है. इनमे से कुछ की चंता यह थी कि उनकी सरकारी नौकरी वाली बीवयिों केतबादले न हों और अगर हो गया है तो उसे कैसे रुकवाया जाये. ब्राम्हण पत्रकारों की □क्ता केनाम पर हु□ इस आयोजन से तमाम सारे उन पत्रकारों ने दूरी भी बनाये रखी जो सरि्फ पत्रकारिता में यकीन रखते है. इंदौरी अंदाज में मध्य प्रदेश केमुख्यमंत्री शविराज सहि केखलिाफ मोर्चा खोलने केइस अभयिान की वैसे तो अपने आप ही हवा नकि्ल गयी क्यूंकि २७ लोग मलिकर क्या खचिड़ी पका रहे है, यह बाकी पत्रकारों की समझ में आ गया.

कार्यक्रम में शामलि मनोज मश्रि ने कहा कि "दलालों और चरत्रिहीनों केरहते ऐसा कोई आयोजन सफल नहीं हो सकता क्यूंकि पत्रकारिता कसिी जाति वशिेष से जुड़ा मसला नहीं है. हम सारे समाज केहै, सरि्फ ब्राम्हणों केनहीं. जो लोग भी इस आयोजन केपीछे है वे भी समझ लें कि पहले पत्रकार को पत्रकार बन जाने दो, फरि उसे ब्राम्हण और राजपूत या दीगर जात में बाँटना. वैसे भी उस आयोजन में जो लोग सामने थे, उनकेलक्षण ब्राम्हणों वाले थे नहीं. कुछ की काम वासनायें उनकेचेहरे पर थी तो कुछ सुबह से ही दारु पी कर चले आये थे.

इस आयोजन से उम्मीद थी कि सारे ब्राम्हण क्लमघस्सि□ कहो कर राजनीति में बदलाव की नई इबारत लखिेंगे लेकनि हुआ ठीक उसका उल्टा. इनमे जनि चेहेरों को सामने लाया गया उनकेकारनामों से ब्राम्हण जाति और पत्रकारिता दोनों शर्मसार हुई. सो अधकिांश ब्राम्हण पत्रकारों ने भोज कयिा और अपने-अपने घर खसिकल□. आयोजन स्थल पर जो लोग बचे थे, वे सोंचे, वे क्या वाकई पत्रकार है और क्या सरि्फ पत्रकारिता कर रहे है या इसकी आड़ में उनकी मंशा कुछ और है.

बी□स मीणा केमीडयिा हाउस ब्लाग से साभार